पूर्वी यूरोप में चली खुली हवा

जोसेफ स्टालिन ने अपने जमाने में बाल्टिक सागर से एड्रियाटिक तक जो कम्युनिस्ट निरंकुशता का किला तैयार किया था उसकी अंतिम ईंट भी पिछले पखवारे गिर गयी, जब कई हजार लोगों ने रोमानिया के तानाशाह निकोले सेसेस्कू के महल में घुस कर २४ वर्षों का आतंक आनन-फानन में खत्म कर दिया और सेसेस्कू को पत्नी समेत गोलियों से छलनी करके कम्युनिस्ट बर्बरता समाप्त कर दी।

वर्ष १९८९ इस मायने में काफी महत्वपूर्ण वर्ष के रूप में याद किया जायेगा, जब समूचे पूर्वी यूरोप में एक नया तूफानी दौर चला और कम्युनिस्ट खेमे के तमाम देशों की जनता ने खुली हवा में सांस लेने के लिए जनतांत्रिक भावनाओं के दमन की वर्षों से अपनायी जा रही चंद लोगों की मनमानी नीति के खिलाफ राष्ट्रीय स्तर पर झंडा खड़ा कर दिया। दरअसल विद्रोह की यह आग काफी पहले से सुलग रही थी।

इसका बहुत-कुछ श्रेय सोवियत राष्ट्रपति मिखाईल गोर्बाचेव को भी जाता है, जिनके सुधारवादी कार्यक्रमों ने भी कम्युनिस्ट देशों के लोगों को ४० वर्षों की दबी आकांक्षाओं और आर्थिक पिछड़ेपन के विरोध में आवाज उठाने को प्रेरित किया। रोमानिया के नये शासक भी श्री गोर्बाचेव के अच्छे मित्रों में से हैं।

१९वीं सदी में नेपोलियन बोनापार्ट ने स्पेन से सोवियत संघ तक जीत कर सारे देशों को मिलाकर एक विशाल महाद्वीपीय व्यवस्था का सपना देखा था और उसका एक छत्र शासक बनना चाहता था।

कम्युनिस्ट दर्शन के जनक कार्ल मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी कि बहुत बड़े पैमाने पर सर्वहारा क्रांति होगी और पूरे यूरोप में छा जायेगी। और, जब मार्क्स के वैचारिक उत्तराधिकारी मिखाईल गोर्बाचेव ने एक सामान्य यूरोपीय छत बनाने के लिए चूलेगारा इकट्ठा करना शुरू किया। शेष वर्षों के सोवियत प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए छटपटाते उनके खेमे के देशों ने अपने भविष्य के बारे में सब कुछ स्वयं तय करने का फैसला कर लिया।

पूर्वी खेमे के ये पांच देश हैं, जहां के नये नेताओं ने पुरानी कम्युनिस्ट व्यवस्था को भंग कर अपनी अर्थ-व्यवस्था और राष्ट्रीय नीति पुनर्संगठित करने की तैयारी शुरू कर दी है। वे इस बात पर भी विचार कर रहे हैं कि सोवियत संघ और पश्चिम के देशों के साथ किस प्रकार का संबंध रखा जाय। चूंकि उनमें से अधिकांश पश्चिमी देशों जैसी जनतांत्रिक व्यवस्था की बात कर रहे हैं, इसलिए हो सकता है कि वे उन्हीं देशों के ज्यादा करीब हों। पूर्व और पश्चिम जर्मनी के एकीकरण की बात से तो समूचे यूरोप में बौखलाहट है, क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप के विजयी मठाधीशों ने जर्मनी को युद्ध के लिए दोषी ठहराते हुए उसके साथ ज्यादती की जिसकी वजह से हिटलर पैदा हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भी वही गलती दुहरायी गयी और जर्मनी को इस तरह से विभाजित किया गया ताकि वह कभी एक न होने पाये। आज ४४ वर्षों के बाद फिर से एकीकरण की कोशिश शुरू हुई है, जिसने अमेरीका, फ्रांस और ब्रिटेन जैसे देशों को सोचने को विवश कर दिया है। गोर्बाचेव अभी तक तो ऐसे बात कर रहे हैं मानों जर्मनी के एक होने से सोवियत संघ को कोई फर्क न पड़ता हो, लेकिन अन्दर से वे भी [illegible]शंकित नहीं हैं। वैसे भी उनकी कोशिश रही द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के गठबंधनों से मैत्री बनाने की। यह वही गठबंधन है, जिसने हिटलर की हार के बाद पूरे यूरोप को पूर्व और पश्चिम खेमे में बांट दिया और उसका मुख्य उद्देश्य था कि जर्मनी को हमेशा विभाजित रखा जाये।

पूर्वी (कम्युनिस्ट) खेमे ने पश्चिमी खेमे को पूंजीवादी कहा। सोवियत कम्युनिज्म की प्रसाद सोवियत-पोलैंड सीमा से लेकर जर्मनी के बीमार प्रांत तक हो जाने से सोवियत संघ अपने को बड़े दम्भ से कम्युनिस्ट देशों का सरगना कहने लगा था। दोनों खेमों ने एक दूसरे से खतरे का बहाना बनाकर हथियार जमा करने की होड़ में आपसी सैनिक संगठन बनाने शुरू कर दिये। पश्चिमी देशों ने 'नाटो' बनाया तो कम्युनिस्ट खेमे के देशों के बीच वारसा संधि हुई।

बर्लिन की दीवार का ढह जाना भी अपने-आप में काफी अहमियत रखता है, जिसे १९४६ में



मिखाइल गोर्बाचेव

सरविंस्टन चर्चिल ने बाल्टिक से एड्रियाटिक के बीच का लोहे का पर्दा बताया था। ब्रैंडेनबर्ग गेट के निकट स्थित यह दीवार जर्मनी के विभाजन का प्रतीक थी और इसमें थोड़ी-सी दरार पड़ते ही २८ वर्षों से गिरा हुआ पर्दा उठ गया और पूर्वी जर्मनी के लाखों लोग नाचते-गाते पश्चिम जर्मनी की सीमा में घुस गये।

युगोस्लाविया और अल्बानिया ने तीसरे-चौथे दशक में ही मास्को की चौधराहट को चुनौती दे दी और अब गोर्बाचेव महसूस कर रहे हैं कि उनकी पकड़ कमजोर पड़ चुकी है।

पिछले वर्ष अगस्त से शुरू हुई यह आंधी [illegible]खत्म होते-होते यूरोप के पूरे पूर्वी भाग में छा गयी और पोलैंड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया के साथ-साथ रोमानिया भी अछूता नहीं बचा, जहां १९६५ से मार्शल लॉ के आगे किसी को चूं करने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से तेधूज मेजोविकी पोलैंड के पहले गैर-कम्युनिस्ट प्रधानमंत्री हैं। चेकोस्लोवाकिया की नयी सरकार को कम्युनिस्ट

लालफीताशाही से परहेज है और हंगरी की संसद ने बहुदलीय व्यवस्था के अन्तर्गत बिल्कुल जनतांत्रिक ढंग से चुनाव कराने का प्रस्ताव पारित किया है। चुनाव हाल ही में होने वाला है। २४ वर्षों से रोमानिया के सेस्कू ने जिन सैनिकों की बदौलत जबर्दस्ती सत्ता पर कब्जा जमा रखा था, उन्हें सैनिकों ने ही आखिरकार गोलियों से छलनी कर दिया। यहां तक कि उनकी पत्नी और बच्चे तक को नहीं बख्शा। इसी से जाहिर है कि कम्युनिस्ट निरंकुशता के खिलाफ लोगों के मन में कितनी खुंदक थी।

पिछले छह महीने के अन्दर पूर्वी यूरोप की राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव की इस तीव्र गति ने मिखाईल गोर्बाचेव को भी वर्षों से कायम सोवियत नीति बदलने को मजबूर करदिया। इसलिए सेसेस्कू, चेकोस्लोवाकिया के मीलोस जेक्स और बुल्गारिया के तोदोर जिवकोव को सोवियत समर्थन की अन्तिम उम्मीद हाथ से जाती देखकर आखिर सत्ता से हट जाना पड़ा। उनके साथ विकल्प भी दो ही थे- या तो जनता के मौजूदा रुख के साथ समझौता करें अथवा गद्दी छोड़ दें।

१९४२ में जोसेफ स्टालिन ने नाजी जर्मनी के बारे में कहा था कि नाजियों ने यूरोप को संसार का जेलखाना बनाकर रख दिया, लेकिन स्वयं उसकी तानाशाही का आलम यह था कि जर्मन आक्रमणकारियों का मध्य यूरोप से सफाया करनेके बाद अपने देश में एक भी विरोधी को जिन्दा नहीं छोड़ा। संसार के गिने-चुने आततायी तानाशाहों में स्टालिन का नाम लिया जाता है। और, इसलिए स्वयं स्टालिन की मौत के एक महीने बाद ही उसकी वजह से मृतप्राय लोगों में मानों नयी जान आ गयी और विद्रोह की पहली चिंगारी १९५३ की अप्रैल की एक सुबह को फूटी जब स्टालिन के निजी निर्माण-स्थल पर काम कर रहे पूरी बर्लिन के हजारों कामगारों ने अपनी मजदूर काटे जाने के विरोध में हड़ताल कर दी। शीघ्र ही पूरे देश में वह लहर फैलने लगी और चारों तरफ से आवाजें उठीं- "हम गुलाम बनकर नहीं, आजाद होकर जीना चाहते हैं"। लेकिन, सत्ता पर मजबूत पकड़ वाले सैनिक कामांडरों ने बड़ी तत्परता से सैकड़ों मजदूरों को गोली मारकर स्थिति पर काबू पा लिया।

१९५६ में हंगरी में और १९६८ में चेकोस्लोवाकिया में यही बात दुहरायी गयी। १९६८ में सोवियत संघ ने सेना भेजकर चेकोस्लोवाकिया में अपने पिछलग्गू को सत्ता पर बिठाया। उस आक्रमण को लेकर वहां के बुद्धिजीवियों के दिल में कितनी नफरत थी, इसका सबूत यह है कि पूर्व सरकार से वैसे लोगों को चुन-चुनकर निकाला जा रहा है, जिन्होंने सोवियत संघ का साथ दिया था। उन पर मुकदमा चलाया जायेगा और शायद उन्हें उम्र कैद अथवा मौत की सजा दी जाये।

गत १८ अक्तूबर को एरिक होनेकर को जनता के आगे पूर्वी जर्मनी के चांसलर पद से इस्तीफा देना पड़ा। उनकी ओर से श्रीमती होनेकर ने जनता से माफी मांगी। सोवियत सैनिक मोर्चे पर डटे थे जरूर, लेकिन एरिक होनेकर के सहायतार्थ आगे नहीं बढ़े।

इतने सारे परिवर्तन होते हुए श्री गोर्बाचेव देखते रहे, लेकिन किसी के भी आंतरिक मामले में उन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया। इसकी वजह सिर्फ यही नहीं है कि वे पूरे संसार को यह बताना चाहते हैं कि सोवियत संघ के बारे में अब स्टालिन के जमाने से परे हटकर सोचा जाय, बल्कि उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण कारण यह है कि वे खुद ही अपने देश की आर्थिक और राजनीतिक अस्तव्यस्तता से परेशान हैं। श्री गोर्बाचेव की अपनी ही कुछ राष्ट्रीयताओं ने कम्युनिस्ट परम्परा के खिलाफ बगावत कर दी है। नागोर्नो कराबाल और आर्मेनिया की तनातनी भी फिलहाल बरकरार है ही। जब अपना ही घर जल रहा हो तो दूसरे को संकट से कहां तक उबारते फिरेंगे। अफगानिस्तान से अपनी सेना बुलाकर भी उन्होंने अपनी परेशानी कम की है। वैसे उनकी राजनीतिक उदारता ने सोवियत जनता को एक नये माहौल में जीने का अवसर दिया है,इसमें दो राय नहीं।

आखिर गोर्बाचेव ने ये भी स्वीकार किया कि लियोनिद ब्रेझनेव के आदेश से १९६८ में चेकोस्लोवाकिया पर हुई वार्ता संधि आक्रमण गलत था। बदलती परिस्थितियों के अनुकूल अपने को ढालने के प्रति अपनी सजगता का परिचय उन्होंने यह कह कर दिया कि सोवियत संघ की आंतरिक स्थिति अनुकूल बनाये रखने के लिए अधिक से अधिक खुला अन्तर्राष्ट्रीय माहौल जरूरी है।

आज अगर स्टालिन या निकिता खुश्चेव होते तो वाकई उन्हें बड़ी बौखलाहट होती, क्योंकि सर्वप्रथम खुश्चेव ने ही १९४५ में नवस्वाधीन पूर्वी यूरोपीय देशों को एक सूत्र में बांधा था और १९४७ तक उन सबको मिलाकर इतना मजबूत मोर्चा तैयार कर लिया कि पश्चिम जगत में भी दहशत-सी फैल गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी को बुरी तरह पराजित करने के बाद सोवियत संघ का दबदबा तो अवश्य हो गया था, लेकिन उस समय तक इसका अपना कोई खेमा नहीं था, लेकिन जब बना तो यह कम्युनिस्ट खेमा इतना दबंग साबित हुआ कि यूगोस्लाविया और अल्बानिया के अलग होने के बावजूद कोई फर्क नहीं पड़ा। आज उस खेमे की जड़ उखड़ गयी और उसके साथ ही सोवियत संघ की चौधराहट भी जाती रही।

शशिधर खां

हिन्दुस्तान (पटना) 9.4.1990